e-ISSN:2582 - 7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 4, Issue 8, August 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 5.928

International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408012 |

कथा साहित्य में प्रवासी जीवन और संघर्ष

Dr. Suman Dhaka

Associate Professor, Hindi, Government Girls PG College, Chomu (Jaipur), Rajasthan, India

सार

हिंदी कथा साहित्य की दशा और दिशा विभिन्न सैद्धान्तिक विमर्शों के द्वारा तय की जा रही है। कथा साहित्य को स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि नाना प्रकार के विमर्शों के खाँचों में भरकर देखने की परिपाटी चल पड़ी है। हिंदी में विमर्श, आलोचना की एक विशेष पद्धति के रूप में विकसित हुई है। यह साहित्य को देखने और अनुभव करने के लिए एक नया औज़ार बन गई है। इसी क्रम में प्रवासी साहित्य पर विचार करने के लिए प्रवासी विमर्श का भी उदय हो चुका है। प्रवासी साहित्यकारों के द्वारा रचित साहित्य 'प्रवासी विमर्श' के अंतर्गत अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है।

कथा साहित्य में परिवेश अथवा पृष्ठभूमि, कथानक एवं पात्रों की मनोवैज्ञानिकता को चित्रित करने में अत्यंत कारगर भूमिका का निर्वाह करते हैं। प्रथम दृष्ट्या कथा लेखन में कथाकार का परिवेश, निश्चित रूप से कथानक की बुनावट में असर पैदा करता है, इसके उपरांत कथाकार अपने कथानक के लिए भी एक विशेष परिवेश का चयन करता है जिसमें कथानक अपना विस्तार पाती है। जिस परिवेश में कथाकार जीवन व्यतीत करता है, वह परिवेश उसके लेखन में अनायास रूपित होता है। परिवेश कल्पित भी हो सकता है। कल्पित परिवेश को यथार्थ स्वरूप प्रदान करने की विशिष्टता, केवल अद्भुत कल्पना कौशल युक्त दृष्टि से ही संभव है।

भारतीय परिवेश में रचित कथा साहित्य में भारतीय प्रकृति, समाज और समाज से जुड़ी इतर स्थितियाँ चित्रित होती हैं। भारत से बाहर के देशों में रहने वाले लेखक अपने इर्द-गिर्द के परिवेशजनित सामाजिक स्थितियों का चित्रण स्वाभाविक रूप से करते हैं। विदेशों में बसे हुए भारतीय मूल के रचनाकार ही प्रवासी साहित्यकार कहलाते हैं जो भारतीय भाषाओं में, मुख्य रूप से भारत में बसे साहित्य प्रेमियों के लिए अपने प्रवासी परिवेश एवं पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में साहित्य की रचना करते हैं। प्रवासी साहित्य स्वभाव से परिवेश प्रधान होता है। प्रवासी भारतीय आज विश्व के हर कोने में बसे हुए हैं। दशकों पहले कृषि-मज़दूरी, रोज़गार और बेहतर आजीविका के संसाधनों की तलाश में अशिक्षित, अल्पशिक्षित और सुशिक्षित, सभी श्रेणियों के भारतीय समय समय पर विदेश गमन करते ही रहे और अधिकांश लोग जहाँ आजीविका मिली वहीं स्थायी रूप से बस गए। प्रवासी भारतीयों की विशिष्ट संस्कृति का विकास हुआ। प्रवासी साहित्य में स्थानीयता के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति और समाज के अंतर संबंधों को व्याख्यात किया गया।

परिचय

प्रवासी हिंदी कथा साहित्य निश्चित रूप से कथानक, शैली और शिल्प की दृष्टि से भिन्न और विशिष्ट पहचान रखता है। उपर्युक्त देशों में रचित हिंदी साहित्य स्थानीय परिवेशजनित साहित्य है जिसमें उस देश और काल की स्थितियों का चित्रण होता है। हर देश में सामाजिक नियम, आचार संहिता, जीवन पद्धति उस देश की संस्कृति और परंपराओं से बँधे होते हैं। लेखक अपने परिवेश में जनित समस्याओं, स्त्री-पुरुष संबंधों, वैयक्तिक मनोदशाओं का चित्रण निजी शैली में करता है। विदेशों में रचित हिंदी कथा साहित्य कई अर्थों में भिन्न है। इसमें स्थानीयता के तत्व प्रधान होते हैं, किन्तु मानवीय संवेदनाएँ देश काल की सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं इसीलिए प्रेम, राग, विराग जसई संवेदनाओं की अभिव्यक्ति प्रवासी साहित्य में उसी प्रकार दिखाई देती है जैसी कि सामान्य भारतीय साहित्य में। विदेशी समाज में विदेशी सभ्यता और संस्कृति के मानदंडों के बीच जीवन बिताते हुए भारतीय आचार-विचार, राति-रिवाज में पलकर बड़े होकर, रोज़गार के लिए विदेशों में बसने के उपरांत विदेशी जगत के नीति-नियमों के साथ टकराहट की स्थिति उत्पन्न होती है, जो कि स्वाभाविक है। इन स्थितियों से निबटाकर जीवन में सामंजस्य और संतुलन बनाकर जीवन को सुखी बनाना, एक गंभीर चुनौती है। पश्चिमी सामाजिक परिवेश में स्त्री-पुरुष संबंधों तथा दाम्पत्य संबंधों की अनिश्चितता बहुचर्चित एवं बहुचित्रित विषय है। प्रवासी हिंदी कथा साहित्य भी मूल रूप से स्त्री केन्द्रित ही है जो कि स्त्री की सार्वभौमकिता को रेखांकित करता है। प्रवासी कथा साहित्य की एक और विशेषता, स्त्री कथाकारों की बहुलता और प्रधानता है।[1]

अवलोकन

साहित्य को लेकर आज भी हम प्रवासी-अप्रवासी साहित्य के पचड़े में फंसे हुए हैं; और यह हमारे लिए खेदजनक और बहुत ही अपमानजनक है, लेकिन इस थोपे गये या कहें कि अनचाहे परोसे गये नाम 'प्रवासी-साहित्य' के साथ भी 'हिन्दी साहित्य को प्रदेय'

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408012 |

एकलव्य द्वारा कटे अंगूठे की पीड़ा को पीकर विश्व के श्रेष्ठ धनुर्धर के समक्ष समकक्ष पहचान बनाने जैसा है। पिछले कुछ दशकों से भारत के बाहर विश्व के अनेक भागों से हिन्दी भाषा एवं साहित्य-चिन्तन का उपक्रम सामने आ रहा है। अपनी जड़ों से उखड़े हुए, अपने ससम्मान अस्तित्व और अस्मिता के संघर्ष को भोगते-झेलते अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, फ्रांस, डेनमार्क, आस्ट्रिया, आस्ट्रेलिया, स्वीडन के साथ-साथ और भी बहुत से देशों में बसे भारतीय रचनाकारों ने अपने आस-पास एक छोटा सा साहित्य-संसार रचा है, जहाँ कविता, कहानी, नाटक, निबन्ध, डायरी, यात्रा, भेंट-वार्ता, लघु-कथा और संस्मरणात्मक विधाओं के माध्यम से अपनी शेष-अशेष होती सांस्कृतिक परम्परा का अंश, पीढ़ी-दर-पीढ़ी पाश्चात्य क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा का अन्त:करण में दंश और बहुसांस्कृतिक नवाचार एवं नवरंगयुक्त हंस हैं। भारत-भूमि से दूर, भारतीयता को अपनी संवेदना, अपनी भावनाओं को अपनी कलम-तूलिकाओं से चित्रित करते कलाविदों का पुन: मूल्यांकन करने पर विदित होता है कि हिन्दी साहित्य की पूर्णता में इस प्रवासी हिन्दी साहित्य का प्रदेय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

प्रवासी हिन्दी कथा-साहित्य पर परिचर्चा में प्रवासी साहित्य को उचित स्थान और सम्मान के अवरोध क्या हैं? का उत्तर देते हुए ऊषा राजे सक्सेना कहती हैं कि अनगिनत अवरोध हैं। आलोचकों की बेरुखी और पंडितों का सामन्तवादी अहंकार इसका सबसे बड़ा कारण है। इस मुद्दे पर वे रोहिणी अग्रवाल जी के कथन को सामने रखती हैं- प्रवासी साहित्य को लेकर हिन्दी का आलोचना-जगत ज़्यादा उत्साही और तटस्थ नहीं है। एक तरह का शुद्धतावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए वह भारत की भौगोलिक सीमा में रचित हिन्दी साहित्य को अपना मानता है।

परिणाम

साहित्य अंतरमन और लोकमन की अभिव्यक्ति का माध्यम है। साहित्य का अर्थ उसी के भीतर गुंफित है। जो सबके हित के साथ हो, वह साहित्य। फिर चाहे वो भारतीय साहित्य हो, विदेशी साहित्य हो, दलित साहित्य हों या प्रवासी साहित्य। जिसके मूल में करुणा हों, जो मनुष्य को बेहतर बनाने की ललक से भरा हों , दरअसल वही साहित्य है। जो केवल आत्मरति में डूबा हों, जो केवल एकांगी सोच से सम्पृक्त हों , वह साहित्य होकर भी साहित्य के पद से खारिज है। अश्लील-साहित्य भी कहा जाता है, पर वह साहित्य नहीं है। वह केवल अश्लील है। साहित्य तो वही है जो शील की स्थापना करें और शील के लिए संघर्ष करें। मानव के बुनियादी अधिकारों के लिए खड़ा हों । अपने देश से विदेश में जा बसे भारतीय लेखकों ने अपना लेखकीय धर्म निभाया है और विभिन्न देशों में रहते हुए साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से जो रचनाएँ दी हैं। उनमें दो-तीन बातों को प्रमुखता के साथ रेखांकित किया गया है। पहली बात, उनमें नॉस्टेल्जिया है। दूसरी बात, भारतीय मन के विज्ञान को समझने की कोशिश हैं और तीसरी बात, विदेशों में रहते हुए वहाँ आने वाली चुनौतियों की पड़ताल भी है और मानवाधिकार के स्वर भी हैं. वैसे नॉस्टेल्जिया सबसे प्रमुख है। अपनी धरती को छोड़ कर नौकरी या व्यवसाय के लिए गया भारतीय बार-बार अपने वतन की ओर लौटता है। वहाँ की स्थितियों की तुलना वह अकसर अपने देश, अपने शहर और वहाँ के परिवेश से करता है। दुख-सुख के मौकों पर उसे वतन की याद आती है। यही कारण है कि वहाँ बसे भारतीय विभिन्न पर्वों पर एक साथ मिलते हैं और उत्सव मनाते हैं। ट्रिनिडाड (वेस्टइंडीज) में 'दिवाली नगर' है, जहाँ एकत्र हो कर सारे भारतवंशी उत्सव मनाते हैं। वहाँ जाने और उन सबको देखने-समझने का सौभाग्य मुझे मिल चुका है। मॉरीशस को देखा है, जहाँ भारतवंशियों ने 'गंगातलाव' बनाया है। एक बड़ा कुंड जिसके जल में गंगाजल डाल कर बना दिया गया गंगातलाव । वहाँ भव्य मंदिर भी हैं जहाँ भारतीय एकत्र हो कर अनेक मंगल कार्यक्रम करते हैं। अमरीका, ब्रिटेन, सूरीनाम, गयाना, फीजी, मॉरीशस सहित अन्य देशों में भारतवंशी अपने देश को याद करते रहते हैं। और इनके बीच जो लेखक हैं, वे भारतीय मन को, उनके संघर्ष को लेखनी के माध्यम से रूपायित करते रहते हैं। अनेक अनपढ़-कमजोर भारतीय लोगों को गिरमिटिया मजदूर बना कर त्रिनिडाड, सूरीनाम, मारीशस और फीजी आदि देशों में ले जाया गया। फ्रांसीसी, अँगरेज़ इनको कुली कहकर पुकारते थे। बहुत -सी महिलाओं के साथ छल कर उन्हें ले जाया गया। और वहाँ उनके साथ हर तरह का अत्याचार होता रहा। इन सबका प्रतिवाद उस समय लिखे गए प्रवासी साहित्य में दिखता है। फीजी के प्रख्यात कवि काशीराम कुमुद की रचनाओं में भारतीयों के शोषण के अनेक चित्र दिखते हैं। कमलाप्रसाद मिश्र जैसे श्रेष्ठ कवियों ने भी साहित्य के माध्यम से आवाज बुलंद की। भोली-भाली औरतों से खेतों में काम लिया जाता था। उनको ठीकठाक मजदूरी भी नहीं मिलती थी, [2] उल्टे उन का शारीकि शोषण भी होता था। अपनी इस व्यथा को एक स्त्री कुछ इस तरह कहती है-

सैंया तेरे कारने जल बल हो गई राख/ पत से बेपत भई पंचन में गई साख।

और यह पंक्ति भी काबिलेगौर है- / जो मैं ऐसा जानती, फीजी आए दुख होय। /

नगर ढिंढोरा पीटती, फीजी न जइयो कोय।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408012 |

विचार - विमर्श

हालांकि अब तो वह दौर खत्म हो गया है । गिरमिटिया मजदूर के रूप में गए मजदूरों के परिवार के लोग अब तो फीजी, सूरीनाम और मारीशस में शासनाध्यक्ष भी बन रहे हैं। लेकिन वे अपने अतीत को भूले नहीं हैं। इसलिए भारतवंशी जो साहित्य लिख रहे हैं, उनमें अतीत के दर्द का वर्णन होता ही है और वर्तमान का भी। जैसे अब जो फीजी का भारतीय है। [3] वह जब कविता लिखता है तो फीजी को अपनी माता कहता है, मगर हिंदी को भी दुलार के साथ याद करता है। हिंदी में रचनाएँ करता है। कवि शिवप्रसाद की कविता है-

हमने इस देश को सींचा है /इसीलिए इसे अपनाया है।/फीजी के हम सब वासी हैं,/ये ही जननी है, माता है।

सुखराम ने हिंदी के लिए कितने सुंदर विचार रखे हैं-

हिंदी हमारी मातृभाषा हिंदी हमारा धर्म है। / हिंदी हमारी संस्कृति हिंदी हमारा कर्म है।

फीजी के साहित्य का मैंने गंभीरता के साथ अध्ययन किया है इसलिए उसके अधिक उदाहरण मेरे पास है। पूरा आलेख फीजी के प्रवासी साहित्य पर भी केंद्रित कर सकता था। लेकिन फिलहाल छोटी-सी बानगी भर पेश कर रहा हूँ। फीजी में गरिमिटया अपने अधिकारों के लिए कितना सजग था। उसका अपना स्वाभिमान था जो वह हुंकार भी भरता था। कवि पं. कमलाप्रसाद मिश्र ने इस भावना को अपनी कविता एक गरिमिटिया मजदूर में कुछ तरह से व्यक्त किया है-

...है मुझे बर्दाश्त पाऊँ नित्य आधी रात खाना। / है मुझे बर्दाश्त आदी रात सूखा भात खाना।

पर नहीं बर्दाश्त मुझको साहबों के लात खाना।

कवि ज्ञानीदास भी फीजी के जागरूक लोगों की सोच को दर्शाने वाली अनेक कविताएँ करते हैं। फीजी के वीर नामक कविता में वे कहते हैं-

मत हमें एक बालक समझो, हम हैं फीजी के वीर। / भारत का खून हैं हममें , फीजी में जन्म लिए हैं।

हैं कर्तव्य हमारा जिस देश में पले हुए हैं।/ अवसर मिला चला देंगे, अभिमन्यु जैसा तीर, / हम हैं फीजी के वीर ।

फीजी की तरह ही मारीशस के अनेक लेखकों ने भी वहां हो रहे मानवाधिकार-हनन को अपनी रचनाओं का मूलाधार बनाया। मॉरीशस महान लेखक वहाँ के उपन्यास सम्राट अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'लाल पसीना' में गिरमिटया मजदूरों के शोषण और उनके संघर्ष की सुदीर्घ कथा है। वैसे तो अनत जी के पाँच कहानी संग्रह और कुल पैंतीस उपन्यास है। लेकिन उनकी पहचान 'लाल पसीना' नामक उपन्यास से हुई है। जैसे- हम चंद्रधर शर्मा गुलेरी कहते हैं, हमारे ज़ेहन में 'उसने कहा था' कहानी का नाम आ जाता आ जाती है। उसी तरह अभिमन्यु अनत मतलब ही है 'लाल पसीना'। यह उनकी शुरुआती उपन्यास है जो तीस साल पहले 'धर्मयुग' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास को हम मानवाधिकार के लिए जूझते प्रवासी साहित्य का सशक्त उदाहरण कह सकते हैं।[4] इसमें अनत जी ने बताया है कि कैसे चंद फ्रांसीसी भारतीय मजदूरों को बहला-फुसला कर काम मॉरीशस ले जाते हैं और उन पर जुल्म करते हैं। भारतीय मजदूर वहाँ चट्टानें तोड़ते हैं और वहाँ की धरती को समतल कर देते हैं। फिर वहाँ गन्ने की फसल उगाते हैं और उस धरती को मिठास से भर देते हैं। पूरा उपन्यास शोषण और शोषकों के बीच संघर्ष का मार्मिक दस्तावेज है। अभिमन्यु अनत कवि भी हैं। उनके चार काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी छोटी-छोटी कविताएँ बेहद मारक होती हैं। व्यंग्य से लबरेज। एक कविता देखें।-

जिस दिन सूरज को / मजदूरों की ओर से गवाही देनी थी / उस दिन सुबह नहीं हुई

सुना गया कि / मालिक के यहाँ की पार्टी में / सूरज ने ज्यादा पी ली थी।

प्रसिद्ध व्यंग्यकार डॉ. प्रेम जनमेजय जब कुछ वर्षों के लिए ट्रिनिडाड गए तो उन्होंने 'जहाजी चालीसा' लिख कर गिरमिटया मजदूरों के श्रम का वंदन किया था। उनकी एक चर्चित कहानी 'क्षितिज पर उड़ती स्कारलेट आयबिस' भी वतन से दूर रहने वालों के जीवन पर केंद्रित है। प्रवासी साहित्य का प्रारंभिक काल तो मानवाधिकार से ही भरा पड़ा है। बाद के साहित्य में भले ही अन्य विषय आते

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408012 |

गए, लेकिन प्रारंभिक साहित्य में मानवाधिकार प्रमुख रहा है। भारतीयों के साथ किये जाने वाले अत्याचारों को प्रतिकार प्रवासी साहित्य का प्रमुख विषय रहा। मॉरीशस के महान कथाकार अभिमन्यु अनत की रचनाओं को हम देखें तो उसके केंद्र में मानवाधिकार ही प्रमुख रहा है। उनकी कृतियों को पढने से समझ में आ जाता है कि भारत से गए गिरमिटिया मजदूरों को कितना भयावह शोषण किया गया।[5]

कई बार यह कहा जाता है कि साहित्य तो साहित्य होता है, क्या भारतीय साहित्य और क्या प्रवासी साहित्य, लेकिन यह बात पूरी तरह ठीक नहीं है। प्रवासी साहित्य और भारतीय साहित्य में बुनियादी अंतर यह है कि भारतीय साहित्य विदेश को कल्पना के आधार पर देखता है और प्रवासी साहित्य यथार्थ के धरातल पर विवेचन करता है।भारतीयों का संघर्ष और उनके मनोविज्ञान को जितनी प्रामाणिकता के साथ प्रवासी साहित्य प्रस्तुत करता है, उतनी प्रामाणिकता के साथ भारतीय-साहित्य प्रस्तुत नहीं कर सकता। साहित्य अनुभूति की कोख से जन्म लेता है और प्रवासी साहित्य में अनुभूतियाँ तथा भोगा हुआ यथार्थ दृष्टव्य भी होता है। सन् 2002 में जब मैं ट्रिनिडाड गया तो लौट कर एक कहानी लिखी थी-'भाई साहब'। इसमें मैंने यह बताने की काशिश की थी कि आज भी विदेश में बसे भारतवंशी भारतीय संस्कृति और संस्कार से कितनी गहराई से जुड़े हुए हैं।यह कहानी भारत में बैठ कर कदापि नहीं लिखी जा सकती।वहाँ के लोग, वहाँ के नागरिकों के मनाम, वहाँ की जीवन-शैली, यह सब उस देश में रह कर ही देखा-समझा जा सकता है। इसलिए प्रवासी साहित्य कहना ही सार्थक है।प्रवासी साहित्य से दुनिया को परिचित कराने का काम अभिव्यक्ति-अनुभूति जैसी ई पत्रिकाओं ने किया है। अब तो अनेक देशों से साहित्यिक पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हो रही हैं, जिनमें प्रवासी साहित्य की ही प्रमुखता होती है। ऐसी पत्रिकाओं में प्रकाशित अनेक रचनाएँ हमें देखने को मिलती हैं जो प्रवासी-साहित्य की सुंदर बानगी प्रस्तुत करती हैं। फिर चाहे वह साहित्य की किसी भी विधा में प्रस्तुत की गई हो। हालांकि कविता और कहानी विधा के माध्यम से प्रवासी मन अधिक अभिव्यक्त हुआ है।लेकिन कहानियों के माध्यम में प्रवासी जीवन की गहरी पड़ताल होती रही है।[6]

परिणाम

अपने देश से दूर रह कर कहानियाँ लिखने वाले कुछ कथाकारों का एक संग्रह वतन से दूर शीर्षक से पूर्णिमा बर्मन के संपादन में आ चुका है, जिसमें संगृहीत कुछ कहानियाँ भारतीय मन को अभिव्यक्त करती हैं और और उनके जीवन संघर्ष और अधिकारों पर भी बात करती हैं। सुषम बेदी के अनेक उपन्यास और कहानियों में मानवाधिकार के साथ ही मनोविज्ञान भी देखा जा सकता है।ब्रिटेन में रहने वाले लेखक तेजेंद्र शर्मा ने अपनी कहानियों के माध्यम से प्रवासी भारतीयों के मनोविज्ञान को अधिक उकेरा है। काला सागर, ढिबरी टाइट, कब्र का मुनाफा, देह की कीमत, यह क्या हो गया, बेघर आँखें जैसे महत्वपूर्ण कथा-संग्रह देने वाले तेजेंद्र अपने आसपास की घटित होने वाली घटनाओं से प्रेरित हो कर कहानियाँ लिखते हैं। उनके कुछ मित्र कनिष्क विमान दुर्घटना में मारे गए थे, तब उन्होंने व्यथित हो कर काला सागर की रचना की थी। दुर्घटना के बाद उन्होंने देखा कि कैसे कुछ लोग अमानवीय आचरण कर रहे हैं। मनुष्य के जीवन की जैसे कोई कीमत ही नहीं। रिश्ते भी बेमानी लगने लगे। उसी तरह उनकी एक कहानी है कब्र का मुनाफा जिसमें आदमी की उस मनोवृत्ति की पड़ताल है जिसमें वह लाश के साथ भी अपना फायदा देखता है। हालांकि उत्तर आधुनिक बनने की गरज से तेजेंद्र कुछेक जगहों पर अराजक भी नजर आते हैं। अपनी एक कहानी कल फिर आना में स्त्री मुक्ति का विद्रूप नजर आता है। [4,5] कहानी की नायिका की शारीरिक भूख को उसका पति शांति नहीं कर पाता तो नायिका घर में घुसे चोर के साथ अपनी इच्छा पूरी करती है। एक तरह से देखा जाए तो यह कहानी स्त्री के अपने दैहिक अधिकार की वकालत करती -सी नजर आती है लेकिन अंतत: नारी के पतन की गाथा भी रचती चलती है। अगर यही सोच स्थाई हो जाए ता न जाने कितने घर व्यभिचार के अड्डे बन जाएँगे। बावजूद इक्का-दुक्का गुमराह कहानियों के तेजेंद्र का कथा-संसार बेहद समृद्ध है। उनमें संवेदना कूट-टकूट कर भरी है, तभी वे कोख का किराया, पासपोर्ट का रंग, बेघर आँखें, और कैंसर जैसी कहानियाँ लिख सके।

सुधा ओम धींगरा भी वर्षों से अमरीका में रह रही हैं। पहले 'हिंदी चेतना' और अब 'विभोम स्वर' नामक पत्रिका का प्रकाशन करके प्रवासी साहित्य को प्रसारित करने का काम कर रही है। एक सफल कथाकार के नाते उन्होंने अनेक कहानियाँ लिखीं, जिनमें मानवाधिकार और मानव मन दोनों की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। कमरा नंबर 103 , कौन-सी जमीन अपनी और वसूली जैसे कहानी संग्रह के कारण सुधा जी की अपनी खास पहचान है। उन्होंने कविताएँ भी लिखी हैं। पंजाबी में भी आप लिखती रही हैं। उनके सद्य प्रकाशित संग्रह 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' (शिवना प्रकाशन, सीहोर, म. प्र.) पढ़ते हुए अमरीकी और वहाँ बसनेवाले भारतीय की मानसिकता का पता चलता है। वहाँ की भी अनेक नर्सों का आचरण अनेक भारतीय नर्सों से बहुत अलहदा नहीं है। एक अन्य कहानी 'क्षितिज से परे' में उन्होंने स्त्री की अस्मिता और उसके अधिकार तथा संघर्ष को दर्शाया है। भारतीयों पर भी वहाँ के परिवेश का असर होने लगता है। यह स्वाभाविक भी है। सारंगी की शादी के चालीस साल हो चुके हैं, मगर उसका पति सुलभ उसे बेवकूफ ही समझता है और कहता भी रहता है। आखिर अपमान की हद होती है और सारंगी अंतत: पति से तलाक लेकर अपना अलग रास्ता चुन लेती है। भले ही इस राह में दुश्वारियाँ हैं मगर वह राह उसकी अपनी तो होगी।[3]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408012 |

अमरीका, कनाडा और त्रिनिडाड में निरंतर रहनेवाले संगीतकार-गायक और साहित्यकार प्रो. हरिशंकर आदेश को त्रिनिडाड का राष्ट्रकवि कहा जाता है। त्रिनिडाड में तो उनका भव्य आदेश-आश्रम ही हैं। जहाँ वे अक्सर आते रहते हैं। वहाँ निरंतर हिंदी शिक्षण और संगीत शिक्षण का कार्यक्रंम चलता रहता है। त्रिनिडाड-प्रवास के दौरान इनके आश्रम में जा कर वहाँ उनके हाथों सम्मानित होने का सौभाग्य मुझे मिल चुका है। इनका विपुल लेखन भी प्रवासी साहित्य को समृद्ध करता है और मानवाधिकारों को लेकर सजग भी नजर आता है। प्रो. आदेश का महाकाव्य अनुराग, शकुंतला, महारानी दमयंती और निर्वाण के बारे में भले ही हिंदी की समकालीन आलोचना ने नोटिस न लिया हो, पर अनेक विद्यार्थी उन पर शोध कार्य कर रहे हैं। वे सब कालजयी कृतियाँ हैं। आज के समय में हिंदी में महाकाव्य-लेखन की परम्परा लुप्त-सी हो गई है। ऐसे में प्रो. आदेश के महाकाव्य हमारी धरोहर हैं। हम उन्हें प्रवासी साहित्य कह कर हाशिये पर नहीं डाल सकते। अगर ऐसा करते हैं तो यह साहित्यिक अपराध ही कहा जाएगा। प्रो. आदेश ने कविताओं के अलावा सैकड़ों कहानियाँ भी लिखी हैं। उनके कुछ उपन्यास और नाटक भी हैं । बच्चों के लिए भी उन्होने खूब लिखा है। लगभग तीन सौ पुस्तको के रचयिता प्रो आदेश कुछ पत्रिकाओं का प्रकाशन भी करते हैं। पुरा कथाओं को आधार बना कर उन्होंने जो साहित्य सृजन किये हैं, उनमें वर्तमान समय की विसंगतियों की भी झलक दिखाई पड़ती है। ये कितनी सुंदर बात है कि प्रो. आदेश के गीत गयाना, सूरीनाम, कनाडा, त्रिनिडाड, अमरीका से लेकर भारत तक के कुछ स्कूलों और मंदिरों में भी गाये जाते हैं।[2]

निष्कर्ष

सुषम बेदी (अमरीका) के साहित्य का भंडार भी विपुल है। आठ उपन्यास, दो कथा संग्रह, एक काव्य संग्रह है। हिंदी नाटकों पर शोध भी किया है। 1979 में अमरीका में बसने के बाद बी उनका लेखन नहीं छूटा, वरन वहाँ जा कर गति तथा धार भी और तेज हुई। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रवासी साहित्य को एक ऊँचाई प्रदान की। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से अतीत की मधुर स्मृतियों के अनेक सुंदर चित्र खींचे हैं। मानवीय रिश्तों के अंतरद्वंद्व को भी उकेरा है। अपने उपन्यास में उन्होंने अमरीका में रह रहे हिंदुस्तानियों के चरित्र को खोल कर रख दिया है। वहाँ रहने वाला हिंदुस्तानी भारतीयता से कट कर अपने को अमरीकी जीवन में समरस करना चाहता है लेकिन भारती संस्कृति के प्रति लगाव है, यह भी दिखाना चाहता है। सुषम की अनेक रचनाओं में यह व्यथा भी सामने आती है कि भले ही अमरीका में भारतीय अपने को खुश बताने की कों शिश करें, लेकिन भीतर ही भीतर वे दुखी हैं। टूटे हुए हैं। कमजोर हैं। सुधा ओम धींगरा के दिए गए अपने एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा भी था-"जीवन में जो स्थायी और मूल्यवान है,जैसे धर्म, संस्कृति और पारिवारिक संम्बंध, जब उन्हीं में तारतम्य नहीं रहता, उन्हीं में छेद दिखने लगते हैं, चाहे वे संस्कृतियों के टकराव की वजह से हो, अऔरत के प्रति अन्याय की वजह से या आप्रवासी जीवन की विषमताओं की वजह से – तो मेरा अपना केंद्र कहीं डगमगा जाता है। उसी धुरी और केंद्र या जीवन को स्थायित्व देने वाले सूत्रों की खोज रचना की भी तलाश बन जाती है।" [4] एक अन्य प्रश्न के उत्तर में सुषम और अधिक महत्वपूर्ण बात कहती हैं कि "साहित्य जब कोई समस्या उठाता है तो उसका पूरा -का-पूरा ट्रीटमेंट मानवीय आधार पर होता है। मानवता जो कलात्मकता के बीच उभरती है। , उसकी स्टेमेंट देने की जरूरत नहीं होती।" सुषम की एक चर्चित कहानी है- 'अवसान', जो मानवाधिकार और मनोविज्ञान दोनों पर विमर्श करती है। यह कहानी पूर्णिमा बर्मन द्वारा संपादित पुस्तक 'वतन से दूर' में संगृहीत है। इस कहानी का पात्र शंकर अपने भारतीय संस्कारों के प्रति रागात्मक सोच रखता है। जब उसका दोस्त दिवाकर मर जाता है तो वह भारतीय रीति से उसका अंतिम संस्कार करना चाहता है, लेकिन उसकी पत्नी हेलेन विरोध करती है। अंतत: ईसाई रीति से ही उसका अंतिम संस्कार होता है। लेकिन उस दौरान शंकर का मन बेचैन रहता है। जैसे ही पादरी ओल्ड टेस्टामेंट की पंक्तियाँ पढने के बाद आमीन कहता है, तो "शंकर सहसा खड़ा हो कर संयत आवाज में गीता के श्लोक उच्चारित करने लगा"। उसका अंगरेज़ी में अनुवाद भी कर देता है। वहाँ उपस्थित लोग हतप्रभ रह जाते हैं। लेकिन शंकर को लगता है, "ताबूत में खामोश लेटे दिवाकर को चेहरा उसकी ओर देख कर मुसकराया है।" कहानी की यह पंक्ति प्रसन्न कर देती है कि हमारी भारतीय संस्कृति मुर्दे में भी जान फूँक सकती है। यह कहानी भारतीय मन की और उसके अधिकार के उपयोग की ललक की अद्भुत अभिव्यक्ति है।[1]

भविष्य का दायरा

प्रवासी साहित्य से जब हम गुजरते हैं तो ऐसे अनेक विषय सामने आते हैं। रंगभेद की मानसिकता पर प्रहार करनेवाली रचनाए अमेरिका और ब्रिटेन में अधिक लिखी गई.वहाँ बसने वाले भारतीयों के जीवन के संघर्ष के साथ ही उनकी निरंतर होती -निर्मम मानसिकता प्रमुख है। उनका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कहानियों में खूब चित्रित होता है। स्वार्थपरता की इंतिहा भी दीखती है। अपने सगे लोगों से अलगाव, उनका स्वार्थपूर्ण उपयोग प्रमुख है। ईमानदार और बेईमान लोगों के बीच का संघर्ष प्रवासी साहित्य की विषय वस्तु है। कुछ के लिए वहाँ के उन्मुक्त जीवन की कथाएँ भी हैं, लेकिन वह जीवन का एकांगी पक्ष है। वह प्रवासी साहित्य का भारतीय चेहरा नहीं है। वह पश्चिम जीवन -शैली की भोंडी या अश्लील नकल भर है। इससे प्रवासी साहित्य की छवि धूमिल होती है। उस छवि को चमकाने का काम प्रो. हरिशंकर आदेश, श्याम त्रिपाठी, सुमन घई, अश्विन गांधी (कनाडा), अभिमन्यु अनत, राज हीरामन, हेमराज सुंदर, अमरावती बाबूलाल,अजामिल माताबदल, सोमदत्त बखोरी, अनीता ओजायब, पुष्पा बम्मा, भानुमती नागदान

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 8, August 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0408012 |

(मॉरीशस) सुधा ओम धींगरा, सुषम बेदी वेदप्रकाश बटुक, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, देवी नागरानी, शशि पधा, राकेश खंडेलवाल, अनिता कपूर, सुरेंद्र तिवारी,अनिल प्रभाकुमार, इलाप्रसाद, स्वदेश राणा, प्रतिभा सक्सेना, अमरेंद्र कुमार आदि (अमरीका), उषा राजे सक्सेना, शैल अग्रवाल, महावीर शर्मा, अचला शर्मा, दिव्या माथुर, प्राण शर्मा, गौतम सचदेव, तेजेंद्र शर्मा, शिखा वार्षणेय, कृष्णकुमार, जय वर्मा, पदमेश गुप्त, उषा वर्मा, नरेश भारतीय, महेंद्र देवसर, जकिया जुबैरी, महेंद्र वर्मा आदि (ब्रिटेन), चांद शुक्ल हदियाबादी,अर्चना पेन्यूली (डेनमार्क), पूर्णिमा बर्मन(दुबई), सुरेशचंद्र शुक्ल (नार्वे) जैसे लेखक कर रहे हैं। फीजी के कुछ लेखकों के नामों का उल्लेख कर चुका हूँ। इसके अलावा भी अनेक लेखक हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रवासी साहित्य को समृद्ध किया है और लेखकीय अस्मिता का झंडा उठाते हुए भारतीयों के संघर्ष को स्वर दिया है। उनके नाम भले ही मैं भूल रहा हूँ,[5] अनजाने में उनका उल्लेख नहीं कर सका, मगर वे भी बड़ा काम कर रहे हैं। अंत में मैं कहना चाहूँगा कि भारतीय विश्वविद्यालयों में प्रवासी भारतीय साहित्य का अध्ययन अनिवार्य किया जाना चाहिए ताकि भारत की नई पीढ़ी उन भारतीय लेखकों से भी परिचित हो सकें जो देश से बाहर रह कर भी हिंदी भाषा की सेवा कर रहे हैं और अपनी रचनाओं के माध्यम से अन्याय-अत्याचार, विषमता आदि को भी स्वर दे रहे हैं। इस दिशा में शिवाजी विश्वविद्यालय का अभिनंदन करना चाहूँगा कि यहाँ प्रो, हरिशंकर आदेश अध्ययन पीठ की स्थापना हो चुकी है। अन्य विश्वविद्यालयों में भी प्रवासी साहित्य अध्ययन पीठ की स्थापना की जाना चाहिए।[6]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. अक्षरम संगोष्ठी, अप्रैल-जून 2006, पृ. 6
2. उषा राजे सक्सेना, 'प्रवासी हिंदी लेखन तथा भारतीय हिंदी', 'वर्तमान साहित्य', कुंवरपाल सिंह, नमिता सिंह (संपादक), जनवरी-फरवरी-2006, पृ. 62
3. डॉ. कमल किशोर गोयनका, 'भूमिका शब्दयोग', अप्रैल 2008, पृष्ठ-6-
4. कमल किशोर गोयनका, विश्व हिंदी रचना, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली-2003
5. प्रवासी साहित्य : जोहान्सबर्ग से आगे, प्रधान संपादक, डॉ. कमल किशोर गोयनका, प्रकाशक-विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली, संस्करण-2015
6. विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 5.928

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

9710 583 466 9710 583 466 ijmrset@gmail.com

www.ijmrset.com